P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षा में स्वतन्त्रता एवं अनुशासन की उपादेयता

सारांश

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में बृद्वि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, और सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना व बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है, तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियां सिखाई जाने लगती है। जब वह तीन–चार वर्ष का होता है, तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाने लगते है। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता है। इस प्रकार सीखने–सिखाने का क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है, और जीवनपर्यन्त चलता रहता है। इस सम्बन्ध में शिक्षाशास्त्रियों का विचार है– "शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।"

पी0 के0 त्यागी
अध्यक्ष
सांख्यिकी विभाग
डी0पी0बी0एस0 पी0जी0 कालेज,
अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ0प्र0)
भारत

कृष्ण चन्द्र गौड़
अध्यक्ष
शिक्षा विभाग
डी0पी0बी0एस0 पी0जी0 कालेज,
अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ0प्र0)
भारत

मुख्य शब्द : सुसंस्कृत, विवादास्पद, दायित्व, आध्यात्मिक, निरंकुशता ।

प्रस्तावना

वस्तुतः किसी समाज में सदैव चलने वाली, सीखने–सीखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है। शिक्षा का मुख्य उददेश्य शारीरिक, चारित्रिक, मानसिक एवं बौद्विक विकास के साथ ही साथ मानवीय गुणों का विकास करना है।

शिक्षा में स्वतन्त्रता एवं अनुशासन का प्रयोग प्रायः किया जाता है, किन्तु इनके अर्थों के बारे में विवादास्पद बातें उठाई जाती हैं, दार्शनिक धरातल पर इन संप्रत्ययों की व्याख्या करने से यह स्पष्ट होता है कि इनका स्वरूप एकार्थक न होकर अनेकार्थक अवश्य है।

हैरी शोफील्ड ने अपनी रचना 'द फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन' में मॉरिस कैसटन की पुस्तक 'फ्रीडम ए एनालिसिस' स्वतन्त्रता पद की परिभाषाओं का उल्लेख किया है, जिसे यहां विशेष रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. "संकल्प की पूर्णता को ही स्वतन्त्रता कहा जाता है। बुद्वि की स्वतः स्फूर्तता की स्वतन्त्रता है।" **(डनस्काउटस)**
2. " स्वतन्त्रता से तात्पर्य है– संकल्प शक्ति के अनुसार कार्य करने की क्षमता।" **(लाइबिनत्स)**
3. "स्वतन्त्रता या उन्मुक्तता पद विरोध के अभाव का परिसूचन है।" **(हाब्स)**

उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचारोपरान्त यह स्पष्ट होता है कि इस सन्दर्भ में तीन सम्प्रत्य महत्वपूर्ण हैः–

1. संकल्प (Will)
2. तर्क (Reason)
3. प्रज्ञा (Intelligence)
4. स्वतन्त्रता में दायित्व (Responsibility) आदि का भाव सदा निहित रहता है, क्योंकि बिना इसके यह स्वच्छन्दता का रूप ले सकती है। यदि किसी पूर्व नियत रूप में हमें उचित या अनुचित के बीच चुनाव नहीं करना हो तो हमारी बुद्वि का उपयोग आवश्यक बन जाता है। किसी भी सत्ता के अनुपालन में हमें अपनी आजादी छोड़नी पड़ती है। हां यह अवश्य है कि यह प्रभुसत्ता कभी अपने हित में ही अनुपालन कराती है तो कभी व्यक्ति विशेष के कल्याण को दृष्टिगत रखकर।

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री हरबार्ट महोदय के अनुसार शिक्षा में बाहरी तौर पर पाबन्दी या अनुशासन लाने से व्यक्ति में आन्तरिक स्वतन्त्रता आती है,

जिससे आत्मानुशासन का मार्ग प्रशस्त होता है तथा व्यक्ति अपने जीवन में कुछ प्राप्त करने चयन करने या अपने अस्तित्व को समझने की स्वतन्त्रता अर्जित कर लेता है। इसी भाव को व्यक्त करते हुए नैश महोदय ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये–

"स्वतन्त्रता के सम्प्रत्यय को 'निष्पत्ति' चयन तथा स्वयं अस्तित्व में रखने की शक्ति का परिसूचक माना है।"

इस प्रकार स्वतन्त्रता के तीन स्वरूप जो हमारे समक्ष उभर कर आये हैंः–

प्रथम स्वरूप

प्रतिबन्ध से मुक्ति जिसका भाव है कि व्यक्ति को कहीं जाने, बोलने एवं अपने विचार को व्यक्त करते समय किसी प्रकार की रूकावट या बाधा का सामना नहीं करना पड़े।

द्वितीय स्वरूप

चयन की स्वतन्त्रता जिसमें व्यक्ति अपने ध्येय को निरूपित करने तथा उस तक पहुँचाने वाले मार्गो एवं उनसे सम्बन्धित विकल्पों को अपनाने के लिए स्वविवेक का प्रयोग कर सकने के प्रति आजाद हो। चयन सम्बन्धी स्वतन्त्रता, व्यक्ति की प्रज्ञा, बौद्धिक क्षमता एवं परिस्थितियों से आबद्ध होती है और उस हद तक उसे अपनी सीमाओं को स्वीकार करना पड़ता है।

तृतीय स्वरूप

आध्यात्मिक स्वतन्त्रता (Spritual Freedom) जिसके तहत व्यक्ति को वास्तविक मुक्ति या मोक्ष से सम्बन्धित लक्ष्य की ओर बढ़ाना मुख्य होता है। इसी प्रकार की स्वतन्त्रता की दृष्टिगत रखकर भारतीय शिक्षा की प्राचीन पद्धति के अनुसार यह दर्शाया गया कि "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् वही शिक्षा है जिससे व्यक्ति को सांसारिक भव बन्धनों से मुक्ति मिले। भारतीय सन्दर्भ में मानव जीवन के चार पुरूषार्थों– धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के अन्तर्गत मोक्ष को वरीयता दी गई है तथा शिक्षा द्वारा इस उददेश्य की प्राप्ति करना मुख्य मुददा बनाया गया है।

उद्देश्य

इसके उददेश्य को निम्नलिखित रूपों में दर्शाया जा सकता हैः–

1. छात्रों में शिक्षा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।
2. छात्रों के शिक्षा, स्वतन्त्रता और अनुशासन में विभेद करना सिखाना छात्रों को अनुशासन के महत्व से परिचित कराना ताकि जीवन में वे अनुशासित रहकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकें।
3. छात्रों में अनुशासन के माध्यम से कर्त्तव्य पालन की भावना का विकास करना।
4. छात्रों को जीवन में स्वतन्त्रता के महत्व को समझाना।
5. छात्रों को अनुशासन प्राप्त करने में स्वतन्त्रता की सीमाओं से अवगत कराना तथा उन्हें श्रेष्ठ जीवन जीने हेतु प्रेरित करना।

अनुशासन

अनुशासन से तात्पर्य नियमों का पालन करने से लिया जाता है, परन्तु अनुशासन का वास्तविक अर्थ इससे कुछ भिन्न है। अनुशासन शब्द संस्कृत भाषा का है, और जिसका अर्थ है– आदेश या आज्ञा। प्रारम्भ में अनुशासन और डिसीप्लिन इन दोनों शब्दों का प्रयोग आदेश पालन या नियन्त्रण में रहने से लिया जाता था परन्तु आज अनुशासन का अर्थ इससे कुछ भिन्न रूप में लिया जाता है। इसे और स्पष्ट करने के लिए रायबर्न के विचार द्रष्टव्य हैः–"एक विद्यालय में अनुशासन का अर्थ सामान्यतः व्यवस्था तथा कार्यो के सम्पादन में विधि नियमितता एवं आदेशों की अनुपालना होता है।" (रायबर्न)

शिक्षा में अनुशासन के कार्य

अनुशासन का शाब्दिक अर्थ है आदेश या आज्ञा और इसके पर्याय अंग्रेजी शब्द डिसीप्लिन का अर्थ है– आदेश का नियन्त्रण। मध्यकाल तक इन दोनों शब्दों का अर्थ शिष्य द्वारा गुरू के आदेशों का पालन करने अथवा उनके नियन्त्रण में रहने से ही लिया जाता था, परन्तु इस युग में इसका अर्थ थोड़ेव्यापक रूप में लिया जाता है। आज शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन का अर्थ छात्र एंव छात्राओं द्वारा विद्यालयों के नियमों का पालन करने एवं समाज सम्मत आचरण करने से लिया जाता है।

आज किसी भी स्थिति में उन पर विद्यालयीय नियम थोपे नही जाते और न ही उन्हें समाज सम्मत आचरण के लिए बाध्य किया जाता है कि वह सब करने के लिए स्वयं सोचते हैं। अपने अन्दर वैसा आचरण करते हैं। इसे आज के शिक्षाशास्त्री की स्वानुशासन की संज्ञा देते हैं और इसे ही सच्चा अनुशासन मानते हैं।

अनुशासन के प्रकारः– अनुशासन तथा व्यवस्था में अन्तर स्पष्ट हो जाने पर हमें अनुशासन के प्रकारों पर भी दृष्टिपात करना आवश्यक हो जाता है। नारमन मैक्सन ने अपनी रचना 'दी चाइल्ड पॉथ टू फ्रीडम' नामक पुस्तक के अन्तर्गत विद्यालय व्यवस्था की तीन विधियों का विश्लेषण किया है जो निम्नलिखित हैंः–

दमनवादी विधि

इसमें दण्ड की बहुलता है। इसके अन्तर्गत कष्टदायक उद्दीपकों के अनुप्रयोग द्वारा नायक में भय उत्पन्न किया जाता है और उसकी उन स्वाभाविक प्रवृष्टियों का दमन कर दिया जाता है, जिन्हें वयस्क अपने मानदण्ड के अनुकूल नहीं पाता हैं। दमनवादी विधि की धारणा को समर्थन प्रदान करने में वह जीवन दर्शन कारगर रहा है, जिसके तहत यह माना जाता है कि बालक स्वभाव से ही पापी होना माना जाता है तथा उसकी उस पापी प्रवृष्टि को समाप्त करने हेतु कठोर दण्ड की व्यवस्था परमावश्यक है। इसीलिए अंग्रजी की उक्ति 'स्पेय द रॉड एण्ड स्पॉइल द चाइल्ड' स्कूलों के शिक्षकों में बहुत अरसे तक अति चर्चित रही है।

प्रभाववादी विधि

जिसमें शिक्षक के व्यक्तित्व को महत्व दिया जाता है। इसके तहत सदाचरण, आदर्श एवं व्यक्तिगत प्रभाव के माध्यम से उदाहरण द्वारा अनुशासन लाने के लिए भय आंतकपूर्ण वातावरण के बजाय आदर, प्रेम एवं विश्वास की सहज प्रक्रिया विकसित करने पर जोर दिया जाता है।

मुक्तिवादी विधि

जिसमें किसी प्रकार के बाह्य नियन्त्रण, दबाव या दमन के लिए स्थान नहीं होता। इसके अन्तर्गत आधार

स्वतन्त्रता या निर्बाध उन्मुक्तता पर बल दिया जाता है, जिससे बालक अपनी स्वाभाविक क्षमता के अनुसार पूर्णता की ओर उन्मुख हो सके। इस विधि की प्रमुख विशेषता यह है कि इसके तहत शिक्षक की भूमिका नियन्त्रक या पथ– प्रदर्शक की न होकर एक प्रेक्षक की होती है जो बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के बालक के नैसर्गिक विकास की प्रक्रिया को देखता रहता है।

स्वतन्त्रता एवं अनुशासन का शिक्षा में सापेक्षिक महत्व

सदियों से हमारी देशी व विदेशी अनेकानेक शिक्षा प्रणालियों के तहत इन दोनो धारणाओं को अपनाने के प्रति प्रायः विरोधी मत व्यक्त किये गये है। हमें यह स्मरण रखना होगा कि यहां प्रकृतवादी दर्शन 'स्वतन्त्रता की धारणा को' तथा 'विचारवादी दर्शन' अनुशासन विशेष तौर से उसकी प्रभाववादी विधि को अपनाने की संस्तुति करता है, किन्तु शिक्षा, शिक्षण एवं जीवन की समस्त प्रक्रियाओं में न तो पूर्णरूपेण 'स्वतन्त्रता' की गुंजाइश है और न ही घोर अनुशासनवादी अभियान की। इन दोनों के मध्य एक प्रकार के सन्तुलन रखने की आवश्यकता से नाकारा नहीं जा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि जरूरत से ज्यादा 'अनुशासन' तथा किसी सीमा विशेष से अधिक स्वतन्त्रता या निरंकुशता व्यक्ति को अपने सही मार्ग को चुनने, उस पर चलने तथा अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में बाधक हो सकती है। इस सम्बन्ध में संस्कृत भाषा में एक उक्ति प्रचलित है– 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' किसी भी चीज की अधिकता वर्जित है।

इस प्रकार शिक्षा में स्वतन्त्रता व अनुशासन का विशेष महत्व है। यदि अनुशासन शिक्षा की आधारशिला, तो स्वतन्त्रता इसका भवन है। दोनों ही एक दूसरे के पूरक है अर्थात दोनों का अन्योनयाश्रित सम्बन्ध है। अनुशासन व्यक्ति के जीवन का मूल है। जिस प्रकार किसी मशीन को चलाने के लिए बैटरी की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार यदि जीवन को सुव्यवस्थित रूप से चलाना है तो अनुशासन नितान्त अपेक्षित है।

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि बालक के सर्वांगीण विकास में अनुशासन एवं स्वतन्त्रता दोनो ही आवश्यक है। इस सम्बन्ध में मेरे विचार इस कविता के रूप में इस प्रकार हैः–

मूल्यवान आधार हैं युक्त गुण।
बनता इनसें जीवन।।
एक दूसरे के पूरक हैं।
स्वतन्त्रता अनुशासन।।

इति शम्

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पाण्डेय, रामशकलः–उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल, पब्लिकेशन्स आगरा–2, चतुर्थ संस्करण 2010।*
2. *पाण्डेय, रामशकलः– मूल्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
3. *लाल रमन बिहारी एव पलोड़ सुनीताः– शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग, आर लाल बुक डिपो, मेरठ (निकट गवर्नमेंण्ट कॉलेज), मेरठ–250001, द्वितीय संस्करण 2006–07*
4. *सक्सेना, एन0आर0स्वरूप, चतुर्वेदी शिखा, पाण्डेय, के0पी0ः–उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, संस्करण 2009।*
5. *सिंह एम0के0ः–उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, संस्करण 2009।*
6. *पाण्डेय, रामशकल, मदान,पूनमः– शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–2, प्रथम संस्करण 2015–16।*
7. *अदावल, सुबोधः– भारतीय शिक्षा सिद्धान्त, गर्ग ब्रदर्स प्रयाग, इलाहाबाद षष्टम् संस्करण– 1966।*
8. *अग्रवाल एस0के0ः– शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त, राजेश पब्लिशिंग हाउस, शंकर सदन, 729, पी0एल0 शर्मा रोड़ मेरठ। तेरहवां संस्करण–1991–92।*
9. *वर्मा रामपाल सिंह एवं सूद, जे0के0ः– उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।*
10. *चतुर्वेदी, कामना एवं शर्मा सीमाः– शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, ठाकुर पब्लिशर्स लखनऊ, प्रथम संस्करण– 2016*
11. *गौड़ कृष्ण चन्द्र, सिंह बिजेन्द्र एवं त्यागी ओंकार सिंहः–शैक्षिक प्रबन्ध एवं विद्यालय संगठन, अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, 50 प्रताप नगर II टोंक फाटक, जयपुर राजस्थान।*